

## पाठ - बहू की विदा

### एकांकीकार - विनोद रस्तोगी

#### पाठ का उद्देश्य - एकांकी के द्वारा

लेखक ने समाज में व्याप्त दहेज प्रथा एवं धन लोलुपता की निंदा की है। दहेज प्रथा भारतीय समाज की भंगकर व विषाक्त समस्या है। इसका उन्मूलन तभी हो सकता है जब धन या दहेज लेने वाले को सही-सही प्रत्युत्तर मिले। लेखक यह भी संदेश देना चाहत है जब तक हम बहू व बेटी को समान नहीं समझेंगे तब तक हमारी बेटियों को दहेज न लेने पर धातनाएँ सहनी पड़ेंगी जिस दिन यह भेद समाप्त हो जाएगा उस दिन इस समाज से इस कुरीति का अंत निश्चित है।

#### शीर्षक की सार्थकता - किसी भी

एकांकीकार का शीर्षक सरल, संक्षिप्त एवं कथानक के अनुरूप होना चाहिए। 'बहू की विदा' शीर्षक इन सभी विशेषताओं से युक्त है। पूरा दहेज न पाने के कारण एक प्रसिद्ध व्यापारी जीवनलाल अपनी पुत्रवधू को विदा नहीं करते हैं। इसी घटना के आधार पर एकांकी का ताना बाना बुना गया है। शीर्षक मूल वेदना को संकेतित करता है। दो बहूओं की विदा की समस्या को विनोद जी दर्शाया है इस दृष्टि से शीर्षक उचित है।

Student Name: \_\_\_\_\_ Grade / Div: \_\_\_\_\_ Roll No.: \_\_\_\_\_ Term: \_\_\_\_\_

Class Test No.: \_\_\_\_\_ Subject: \_\_\_\_\_ Teacher's Signature: \_\_\_\_\_

RTC-9.

मेरे माम पर - - - - - मरहम भेजे।

(क) जीवनलाल के दुख का क्या कारण था?  
इससे उनके किस चरित्र का पता  
चलता है?

(ख) बहू की विदा करने के लिए जीवनलाल  
ने क्या शत रखी थी और क्यों?

(ग) यहाँ मरहम से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट  
कीजिए।

(घ) प्रमोद ने जीवनलाल को पाँच हजार  
रुपए चुकाने के संबंध में क्या  
विचार किया?

उत्तर: जीवनलाल धनवान व्यक्ति है लेकिन  
धन से बहुत लोभी है। वह चाहता है कि  
उनके बेटे की शादी में उन्हें अधिक धन  
प्राप्त हो किंतु उनकी यह मनोकामना  
पूरी नहीं हो सकी। इसका उन्हें बहुत  
दुख है और वह इस दुख को अपने  
हृदय का घाव बताते हैं। इससे पता  
चलता है कि जीवनलाल एक स्वार्थी  
व लोभी व्यक्ति है जिसने अपनी  
सभी भावनाओं को कुचल कर रख  
दिया है।



उत्तर-2. प्रमोद अपनी बहन कमला को विधु कराना चाहता है। वह जानता है कि पहले सावन में कमला अपनी सीखियाँ के साथ ~~बस~~ रहना चाहेगी किंतु कमला के ससुर शादी में मिले कम देहज से खुश है वह कमला को मायके लम्बी भोजना चाहता है जब प्रमोद उन्हें पाँच हजार रुपए दे देता है इसलिए उन्होंने प्रमोद के सामने कमला को ले जाने की यह शर्त रखी थी कि पहले प्रमोद उसे लाकर उन्हें दे दे फिर वह कमला को अपने साथ ले जा सकता है।